वन उत्पादकता संस्थान, रांची

वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित
बांस संसाधन विकास एवं मूल्य वर्धन विषय पर प्रशिक्षण
दिनांक 15.01.2020 से 17.01.2020

वन उत्पादकता संस्थान रांची द्वारा दिनांक 15.01.2020 से 17.01.2020 तक बांस संसाधन विकास एवं मूल्य वर्धन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका विधिवत शुभारंभ संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने दीप प्रज्वलित कर किया| इस अवसर पर संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान), वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों एवं कर्मचारीयों की उपस्थिती रही| कार्यक्रम में झारखंड सरकार के वन विभाग के वनकर्मी, महाविद्यालयी विद्यार्थी, गैर सरकारी संस्था "SISU" के सदस्य एवं जन प्रतिनिधियों सहित कुल 27 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण मे भाग लिया| इस कार्यक्रम का संचालन वैज्ञानिक श्रीमती रूबी सुसाना कुजूर ने किया|

पाठ्यक्रम निदेशक सह समूह समन्वयक अनुसंधान डा. योगेश्वर मिश्रा ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकता बताते हुए एवं इसकी रूप रेखा प्रस्तुत की| प्रतिभागियों की सहभागिता पर हर्ष व्यक्त करते हुये इन्होने बताया की बांस की आवश्यकता एवं इसकी उपयोगिता को देखते हुए बांस रोपण के प्रति विभाग के साथ-साथ किसानों का भी रुझान बढ़ा है| इन्होने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किये गये विषय के सभी पहलुओं पर विशेषज्ञों द्वारा चर्चा की जायेगी|

संस्थान के निदेशक ने स्वागत करते हुये प्रशिक्षण की की सफलता की शुभकामना दी| इन्होने आश्वासन दिया कि सीमित संसाधनों के बीच बेहतर प्रशिक्षण एवं आवश्यक सुविधाओं का प्रयास किया जायेगा| बांस उत्पादन को आय का वैकल्पिक श्रोत बताते हुए बहुआयामी उपयोगों को रेखांकित किया| बांस को "हरा सोना" बताया तथा प्रतिभागियों से आग्रह किया कि अपने अनुभवों को भी साझा करें| उद्‌घाटन कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक आदित्य कुमार ने किया और बताया कि "करके सीखने और देख कर विश्वास करने" प्रशिक्षण का मूल मंत्र है|

प्रथम दिन

कार्यक्रम के पहले दिन के प्रथम सत्र में मुख्य तकनीकी अधिकारी श्री रवि शंकर प्रसाद ने बांस की पहचान ,उसकी विशेषता एवं प्रजातिवार उसकी उपयोगिता को उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया| इन्होने बांस के वैसे प्रजातियों का संरक्षण पर ज़ोर दिया जो बहुउपयोगी है| बांस रोपण के विभिन्न लाभ को विस्तार से चर्चा किया तथा अनुसंधान को प्रयोगशाला से क्षेत्र में ले जाने पर बल दिया|

प्रथम दिन के द्वितीय सत्र में प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम निदेशक डा. योगेश्वर मिश्रा ने बांस उपयोगिता, बांस रोपण के प्रचार-प्रसार,बांस प्रजनन ,पौधशाला स्थापन मोनोपौडियल एवं सिम्पौडियल,बांस के महत्व एवं लाभ–हानि, *Ex situ and In situ* बांस संसाधन विकास आदि विषयों पर व्याख्यान दिया एवं चर्चा किया| पौधशाला स्थापन के विभिन्न आवश्यक अवयव,बांस बीज का महत्व तथा विभिन्न बांस प्रवर्धन एवं रोपण विधियों को वताते हुये इसके अलग अलग तकनीक को विस्तार से चर्चा की| इन्होने ज़ोर देकर कहा की बांस संसाधन,सुदृढ़ बनाए रखने के लिए समय पर बांस विदोहन एवं बांस बखार सफाई अति आवश्यक है| प्रतिभागियों के प्रश्नों का भी संतोषजनक उत्तर दिया|

डा.अनिमेष सिन्हा ने बांस के सूक्ष्म प्रजनन,प्रयोगशाला में पौध निर्माण ,पादप उत्तक संबर्धन आदि को चरणबद्ध तरीके से बताया| इन्होने पादप उत्तक संबर्धन से उसकी प्रजाति एवं अनुवंशिकी सुनिश्चित रहने पर चर्चा की| इन्होने बताया कि प्रयोगशाला में पौध तैयार करने के बाद सख्तीकरण हेतु विभिन्न चरणों से गुजरने के बाद ही क्षेत्र में रोपण योग्य तैयार होता

द्वितीय दिन

प्रथम सत्र में वैज्ञानिक श्री आदित्य कुमार ने कृषि-वानिकी के विभिन्न आयामों पर भी चर्चा की| इन्होने वतया कि कृषि वानिकी करके अतिरिक्त खर्च से बचा जा सकता है| तथा अधिकतम संसाधन का उपयोग किया जा सकता है| वानिकी के साथ-साथ कृषि –फसल हेतु प्रजाति चयन पर भी चर्चा की तथा कृषि वानिकी से संबन्धित पोपलर प्रजाति पर भी प्रतिभागियों से चर्चा की एवं प्रतिभागियों के प्रश्नों का संतोषजंक उत्तर से संतुष्ट किया|

संस्थान के वैज्ञानिक श्री संजीव कुमार ने वन वर्धन में बांस के महत्व पर विस्तार से चर्चा की| इन्होने बांस के लिए भारत सरकार द्वारा वन अधिनियम संसोधन पर भी चर्चा की| इमारती लकड़ियों की महंगाई को देखते हुए एक मात्र बांस ही जंगल को वनवर्धन के लिए कारगर प्रजाति है जिसके वहु उपयोग आज करिश्माई रूप से विश्व मे प्रशिद्धि पा रही है|

दूसरे दिन के दूसरे सत्र मे श्री बी.डी. पंडित तकनीकी अधिकारी एवं श्री महेश कुमार वरिष्ठ तकनीशियन ने प्रतिभागियों को क्षेत्र भ्रमण के साथ-साथ बांस प्रजाति के पहचान,उसके उपयोग,बांस लगाने की विभिन्न विधियाँ,एवं हस्तशिल्प आदि का प्रशिक्षण दिया गया तथा प्रतिभागियों के प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया गया|

तृतीय दिवस

प्रशिक्षण के तीसरे दिन के प्रथम सत्र में आदित्य कुमार ने बांस के आनुवांशिक संसाधनों को सुरक्षित एवं संरक्षित करने के विभिन्न तरीकों को विस्तार से बताया|इन्होने महामारी से हुये नुकसान की भरपाई हेतु भी संसाधन संरक्षण पर चर्चा की| श्री पंडीत तकनीकी अधिकारी द्वारा प्रतिभागियों को संस्थान के उत्तक संबर्धन, मृदा एवं जैव प्रोद्योगिकी प्रयोगशाला का भ्रमण कराया गया एवं संकाय के तकनीशियनों ने विषयवार जानकारी से अवगत कराया|

संस्थान के निदेशक डा.नितिन कुलकर्णी ने बांस के हानिकारक कीट एवं उससे रोकथाम पर एक व्यवहारिक व्याख्यान प्रस्तुत किया जिसमें इन्होने दुश्मन कीट को रसायनिक कीट नाशी का उपयोग ना कर जैविक विधियों से नष्ट करने पर ज़ोर दिया| इन्होने कीटों को पारिश्थितिकी का पहचान बताते हुए प्रकृति का मित्र बताया जिससे पारिस्थितिकी संतुलन बनी रहती है| इन्होने बताया की नाशी कीट प्रबंधन आवश्यक है लेकिन रासायनिक प्रयोगों से बचना चाहिए| जैविक विधियों मे उन्होने क्षेत्र विशेष में प्रकाश करना (light trapping) ,कीटों पर प्रभक्षी कीटों का प्रयोग करना आदि के महत्व को समझाया| बांस के विभिन्न नाशी कीटों जैसे तना छेदक,हरे बांस के नाशी पत्तियों को काटने वाले ,सूखे बांस के नाशी किट आदि के बारे मे बताया एवं रोकथाम पर भी चर्चा किया|

एकीकृत नाशी कीट प्रबंधन की चर्चा करते हुए सूत्र कृमि की चर्चा करते हुये इसके उपयोग से कुछ प्रकार के नाशी कीट का प्रकोप रोका जा सकता है| कार्यक्रम के समापन समारोह मे प्रतिभागियों ने अपना-अपना विचार प्रस्तुत किया तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की|

समापन सत्र में संस्थान के निदेशक द्वारा प्रमाण-पत्र वितरित किया गया तथा प्रतिभागियों द्वारा भी अपना अनुभव बताया गया। अपने सम्बोधन में निदेशक ने वन, पर्यावरण एवं जलवायु मंत्रालय द्वारा चलाये जा रहे इस तरह के प्रशिक्षण से भविष्य में बांस के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्पादन वृद्धि की आशा व्यक्त किया। उन्होने निकट भविष्य में इसी प्रकार के और भी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का आश्वासन दिया। तीन दिवसीय प्रशिक्षण मे विस्तार प्रभाग के श्री एस.एन. वैद्य, मुख्य तकनीकी अधिकारी,श्री बी. पंडित,तकनीकी अधिकारी, श्री निसार आलम,मुख्य तकनीकी अधिकारी,श्री सूरज कुमार, तकनीकी सहायक का विशेष सहयोग रहा| डॉ. योगेश्वर मिश्रा ने धन्यवाद तथा प्रतिभागियों को भविष्य की शुभकमनाएं दी।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की झलकिया

प्रशिक्षको द्वारा प्रशिक्षण

क्षेत्र भ्रमण प्रशिक्षण

समापन एवम प्रमाण पत्र वितरण समारोह

समूह फोटोग्राफ